# कोरी टेन बूम

**(1892-1983)**

1933 से 1945 तक जर्मनी देश पर नाज़ी पार्टी का नियंत्रण था, जिसके नेता एडोल्फ हिटलर थे. हिटलर के दो मुख्य लक्ष्य थे :

1) सभी यहूदी लोगों को मारना; और

2) पूरी दुनिया पर राज करना.



नाज़ी जर्मनी में, यहूदी लोगों को घेर लिया गया और जानवरों की तरह मालगाड़ी के डिब्बों में भर दिया गया और फिर उन्हें "यातना शिविरों" में भेजा गया - जहां उन्हें अपमानित किया गया, यातना दी गई, भूखा रखा गया, कड़ी मेहनत करने के लिए मजबूर किया गया, फिर उनकी हत्या कर दी गई. हिटलर का मानना था कि जर्मन लोग, या "आर्य" "मास्टर रेस" थे और उन्हें दुनिया पर राज करना चाहिए था. हिटलर का मानना था कि यहूदी, जिप्सी, समलैंगिक, और कई अन्य अल्पसंख्यक मानव नहीं थे - और ऐसे लोगों से दुनिया को "शुद्ध" किया जाना चाहिए था. हिटलर की योजना एक-के-बाद-एक करके अन्य देश पर अधिकार करने और उन्हें शुद्ध करने की थी.

1940 में यह लड़ाई, कोरी टेन बूम के देश हॉलैंड पहुंची. हिटलर ने उसके देश पर आक्रमण किया. कोरी ने अपना पूरा जीवन हॉलैंड के शांतिपूर्ण हार्लेम शहर में में गुजारा था. पर अब वो देख सकती थी कि नाजियों ने अपने टैंकों और मशीनगनों के साथ उसके शहर की सड़कों पर कब्जा कर लिया था. कोरी, खुद यहूदी नहीं थी. उसने देखा कि उसके यहूदी दोस्तों को हर समय अपने कपड़ों पर यहूदी "स्टार ऑफ डेविड" पहनने के लिए मजबूर किया गया था. उसने देखा कि दुकानों की खिड़कियों में "यहूदियों को अंदर आना मना है" के साइन-बोर्ड लगे थे. उसने देखा कि यहूदी घरों की खिड़कियों पर पत्थर फेंके गए थे, क्योंकि उसके गैर-यहूदी पड़ोसी इस ज़ुल्म के खिलाफ बोलने से डर रहे थे. उसने यहूदी लोगों को, नाज़ी सैनिकों द्वारा सड़कों से खदेड़ते हुए देखा, और फिर वे हमेशा के लिए गायब हो गए. कोरी खुद को बहुत असहाय महसूस कर रही थी!

लेकिन कोरी और उसका परिवार सभ्य लोग थे, और उन्होंने यहूदी लोगों की ज्यादा-से-ज्यादा मदद करने की कोशिश की और अंत में अपनी जान भी जोखिम में डाली. उन्होंने अपने घर को यहूदियों के छिपने के एक ठिकाने में बदल दिया ताकि नाज़ी उन्हें यातना शिविरों में न ले जा सकें. कोरी के कमरे में, दीवार में एक छेद को कवर करने वाला एक बुक शेल्फ था, और उस छेद के पीछे एक छिपी हुई कोठरी थी, जहां भगोड़े (मुख्य रूप से यहूदी) छिपे रहते थे जब तक कि कोई उनके दरवाजे पर दस्तक नहीं देता. इस तरीके से कोरी और उसके परिवार ने कई लोगों की जान बचाई. फिर एक रात उनके घर पर नाजियों ने छापा मारा. वे वहां छिपे हुए किसी भी यहूदी को तो नहीं पकड़ पाए. लेकिन अफसोस यह था कि उन्होंने कोरी और उसके परिवार के लोगों को पकड़ लिया. कोरी की मां बच गईं क्योंकि परिवार की गिरफ्तारी से पहले ही वो बीमारी से मर गई थीं. फिर सभी को अलग-अलग जर्मन जेलों और यातना शिविरों में भेज दिया गया. कोरी के पिता की एक शिविर में मृत्यु हो गई, और उसकी बहन बेट्सी की भी मौत हो गई.

सौभाग्य से, कोरी इस अद्भुत कहानी को अपनी पुस्तक, "द हाईडिंग प्लेस" में बताने के लिए जीवित रही. रेवेन्स-ब्रुक यातना शिविर में अपने सबसे अंधेरे क्षणों के दौरान, उसने कभी भी अन्य लोगों से प्यार करना बंद नहीं किया. उसने उन लोगों से भी प्यार किया जो उससे नफरत करते थे और उसे मार डालने की धमकी देते थे. कोरी के अनुसार भाग्य ने उसे जीवित रखा और उसे हार मानने से रोका.

